इन्सान !
अपने आपको पहचान

लेखक
वहीदुद्दीन ख़ाँ

अनुवादक
डॉ० कौसर यज़दानी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
'अल्लाह दयावान कृपाशील के नाम से'

सबसे बड़ी समस्या

अगर किसी सभा में यह सवाल उठाया जाये कि आज इन्सान की सबसे बड़ी समस्या क्या है तो विभिन्न लोग उसका भिन्न-भिन्न जवाब देंगे। कोई कहेगा कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि एटमी हथियारों का तजुर्बा बन्द किया जाए, कोई दुनिया की बढ़ती हुई आबादी को सबसे बड़ी समस्या क़रार देगा, और कोई कहेगा कि पैदावार और वितरण-व्यवस्था को ठीक करना, यह आज इन्सान की सबसे बड़ी समस्या है। ग़रज़ यह है कि तरह-तरह के जवाब सुनाई देंगे। इससे ज़ाहिर होता है कि इन्सान अभी इन्सान को नहीं जानता। अगर वह अपने आप को जानता, तो सबके जवाब एक ही होते। सभी यह कहते कि आज इन्सान की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इन्सान अपनी हक़ीक़त को भूल गया है। वह इस हकीकत से ग़ाफ़िल है कि उसे एक दिन मरना है और मरने के बाद अपने मालिक के पास हिसाब-किताब के लिए जाना है। अगर हम ज़िन्दगी की हक़ीक़त को समझ लें तो हम दुनिया को नहीं, बल्कि आख़िरत (परलोक) को अपना असल मसला क़रार देंगे।

आज भी दुनिया के ज़्यादातर लोग खुदा और आख़िरत को नहीं मानते हैं, ऐसा नहीं है कि वे उसको मानते ही न हों। मगर इस मानने का कोई संबंध उनके कर्मों से नहीं है। वास्तविक जीवन में हर व्यक्ति के सामने सिर्फ यह सवाल है कि वह अपनी आज की दुनिया को किस तरह कामियाब बनाये, कल की दुनिया के बारे में वह कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता।

अगर आप शाम के वक्त किसी खुले बाज़ार में खड़े हो जायें और वहां देखें कि लोग किस लिए दौड़-भाग कर रहे हैं, तो आपको मालूम हो जायेगा कि आज के इन्सान किस चीज़ को अपना असल मसला बनाये हुए हैं। ज़रा ध्यान दीजिये कि भरे हुए बाज़ार में मोटरों की दौड़-भाग किस लिए हो रही है, दुकानदार किस लिए अपनी दुकानें सजाये हुए बैठे हैं, इन्सानों का झुण्ड का झुण्ड कहां आता-जाता नज़र आता है, लोगों की बात-चीत का विषय क्या है और एक-दूसरे की मुलाक़ात किस मक़सद से हो रही है, किन चीज़ों में लोग दिलचस्पी ले रहे हैं, उनकी बेहतरीन योग्यताएं और उनकी जेब के पैसे किस मक़सद के लिए खर्च हो रहे हैं, जो खुश है वह क्या चीज़ पाकर खुश है, और जो चेहरे उदास नज़र आते हैं, किस चीज़ की महरूमी ने उन्हें उदास बना दिया है। लोग अपने घरों से क्या चीज़ लेकर निकलते हैं और क्या चीज़ लेकर वापस जाना चाहते हैं। अगर आप लोगों की मशग़ूलियत से, उनके मुंह से निकली हुई आवाज़ों से, उनकी विभिन्न हरकतों से, इन सवालों का जवाब मालूम कर सकें, तो इसी से आप को इस सवाल का जवाब भी मालूम हो जायेगा कि आज का इन्सान किस चीज़ को अपना असल मसला समझता है और क्या हासिल करना चाहता है। सच तो यह है कि बाज़ारों की चहल-पहल और चलती सड़कों पर लोगों का बराबर आना-जाना पुकार रहा है कि आज का इन्सान अपनी इच्छाओं और ख़्वाहिशों के पीछे दौड़ रहा है, वह आख़िरत

(परलोक) को नहीं, बल्कि सिर्फ़ दुनिया को हासिल करना चाहता है। अगर वह खुश है तो इसलिए खुश है कि दुनियावी इच्छाएं पूरी हो रही हैं, और अगर वह दुखी है, तो इस लिए दुखी है कि उस की दुनियावी इच्छाएं पूरी होती नज़र नहीं आतीं। आज की ज़रूरतें, आज का आराम, आज की इज़्ज़त, आज के मौके, बस इन्हीं को पा लेने का नाम लोगों के नज़दीक कामियाबी है। और इन्हीं से महरूम रहने का नाम लोगों के नज़दीक नाकामी है, और यही चीज़ है, जिस के पीछे सारा इन्सानी क़ाफ़िला भागा चला जा रहा है। किसी को भी आने वाले दिन की फ़िक्र नहीं। प्रत्येक व्यक्ति बस आज के पीछे दीवाना हो रहा है।

केवल बड़े-बड़े नगरों का यह हाल नहीं है, बल्कि जहां भी कुछ इन्सान रहते हैं और कुछ चलते-फिरते लोग मौजूद हैं, उन सब का यही हाल है। आप जिस किसी को देखिये, वही इस विचार में डूबा हुआ नज़र आयेगा, औरत हो या मर्द, धनी हो या निर्धन, बूढ़ा हो या जवान, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, शहरी हो या देहाती, यहां तक कि खुदा को मानने वाला हो या ना मानने वाला, सब के सब इसी एक दिशा को भागे चले जा रहे हैं। आज इन्सान की सबसे बड़ी कामना सिर्फ़ यह है कि दुनिया में वह जितना कुछ हासिल कर सकता है, हासिल कर ले, इसी को वह अपने लिए 'काम' समझता है। इसी के लिए अपना समय और अपनी योग्यताओं को ख़र्च करता है। इसी की चिन्ता में रात-दिन घुलता रहता है। हद यह है कि अगर ज़मीर (अन्तरात्मा) व ईमान की बलि देकर यह चीज़ मिले तो अपना ज़मीर व ईमान भी इस 'देवी' की भेंट चढ़ाने के लिए तैयार है। वह दुनिया को हासिल करना चाहता है, भले ही वह जिस तरह मिले।

मगर सुन लीजिए कि दुनिया की कमाई सिर्फ़ दुनिया के काम आएगी, आख़िरत में वह तानिक भी काम नहीं दे सकती। जो

व्यक्ति केवल अपनी आज की दुनिया बनाने की चिन्ता में है और आख़िरत की ओर से ग़ाफ़िल है, उसकी मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जो अपनी जवानी में अपने बुढ़ापे के लिए कुछ जमा नहीं करता, यहां तक कि जब उसकी शक्तियां जवाब दे देती हैं और वह काम करने से मजबूर हो जाता है, तो उसको मालूम होता है कि अब उसका कोई ठिकाना नहीं है। वह देखता है कि मेरे पास मकान नहीं है, मगर वह अब अपना मकान नहीं बना सकता। वह देखता है कि उसके पास मौसमों से बचने के लिए कपड़ा और बिस्तर नहीं है, मगर अब उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि वह अपने लिए कपड़ा और बिस्तर हासिल कर सके। वह देखता है कि उसके खाने का कोई इन्तिज़ाम नहीं हैं, मगर अब वह अपने खाने के लिए कुछ नहीं कर सकता। वह हैरान-परेशान होकर किसी दीवार के साये में चीथड़ा लपेटे हुए पड़ा रहता है, जिस पर कुत्ते भोंकते हैं और लड़के कंकड़ मारते हैं। हम अपनी आंखों से इस तरह की मिसालें देखते हैं, जिससे एक हल्का-सा अन्दाज़ा हो सकता है कि आख़िरत की कमाई न करने वालों के लिए आख़िरत का जीवन कैसा होगा, मगर इसके बाद भी हमारे भीतर कोई खलबली पैदा नहीं होती। हम में से प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ़ अपने आज के बनाने में लगा हुआ है, वह अपने कल की कोई चिन्ता नहीं करता।

युद्ध के समय में जब हवाई हमले का सायरन बजता है और अपनी भयानक आवाज़ से यह ऐलान करता है कि 'दुश्मनों के हवाई जहाज़ आग के गोलों को लिए झुण्ड के झुण्ड चले आ रहे हैं और थोड़ी देर में नगर को आग और धुएं से भर देंगे, लोग फ़ौरन ही पनाहगाहों में पहुंच जायें' तो यकायकी प्रत्येक व्यक्ति करीब की पनाहगाह की तरफ चल पड़ता है और क्षण भर में आबाद से आबाद सड़कें सूनी व वीरान हो जाती हैं। जो व्यक्ति ऐसा न करे उसके बारे में कहा जायेगा कि वह मूर्ख है या उसका दिमाग़ खराब

हो गया है। यह दुनिया के छोटे ख़तरे का मामला है। दूसरा ख़तरा इससे बड़ा और इससे ज़्यादा यक़ीनी है जिसके बारे में जगत के पालनहार की ओर से ऐलान किया गया है कि, 'लोगो! मेरी बन्दगी करो, एक दूसरे के हक़ों को पूरा करो और मेरी मर्ज़ी के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारो। जो ऐसा नहीं करेगा मैं उसको ऐसी सख़्त सज़ा दूंगा कि जिसके बारे में वह सोच भी नहीं सकता। यह एक हमेशा रहने वाला अज़ाब होगा, जिसमें वह हमेशा तड़पता रहेगा और कभी उससे न निकल सकेगा।' इस ऐलान को हर कान ने सुना है और हर ज़ुबान किसी न किसी शक्ल में इसको मानती है, परन्तु लोगों का हाल देखिए तो ऐसा मालूम होगा, जैसे यह कोई बात ही नहीं है। दुनिया के फ़ायदे हासिल करने के लिए वे सब कुछ कर रहे हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए, ज़िन्दगी का क़ाफ़िला तेज़ रफ़्तारी से उस रास्ते पर भागा जा रहा है, जिधर जाने से उसको रोका गया है। फ़ौजी हेडक्वार्टर से जो सायरन बजता है उस पर अमल करने के लिए फ़ौरन ही लोग दौड़ पड़ते हैं, लेकिन इस जगत के स्वामी की ओर से जिस ख़तरे का ऐलान किया गया है, उस से तनिक भी किसी को परेशानी नहीं होती, लोग उसकी पुकार पर नहीं दौड़ते।

इसका सबब क्या है? इसका सबब यह है कि फ़ौजी हेडक्वार्टर का सायरन जिस ख़तरे का ऐलान करता है, उसका संबंध आज के संसार से है, जिसको इन्सान अपनी आंखों से देखता है और उसके नतीजे को फ़ौरन ही महसूस कर लेता है। मगर ख़ुदा की ओर से जिस ख़तरे का ऐलान किया जाता है, वह मरने के बाद पेश आयेगा। हमारे और उसके बीच मौत की दीवार खड़ी है। वह आज की आंखों से हमें नजर नहीं आता। हम न उसके हवाई जहाज़ों को देखते हैं, न उसके बमों को और न उसकी आग और धुएं की बारिश को। इसलिए हवाई हमले के सायरन का तो लोग फ़ौरन ही यक़ीन कर लेते हैं, मगर ख़ुदा ने जिस आवाज़ की ख़बर दी है,

उसको सुनकर उनके भीतर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती। उसके बारे में वह यक़ीन नहीं पैदा होता जो कर्म और अमल पर उभारे।

मगर अल्लाह ने हमको सिर्फ़ वही दो आंखें नहीं दी हैं जो माथे के नीचे दिखायी पड़ती हैं और सामने की चीज़ को देख लेती हैं। हमारे पास एक और आंख है जो अधिक दूर तक देख सकती है, जो छिपी हुई हक़ीक़तों को भी देख सकती है। यह आंख ज्ञान और बुद्धि की आंख है। लोगों के यक़ीन न करने की वजह यह है कि वे अपनी दूसरी आंख को इस्तेमाल नहीं करते, वे सामने जो कुछ देखते हैं, समझते है कि बस, यही सत्य है, हालांकि अगर सोच-विचार से काम लिया जाये तो मालूम होगा कि जो चीज़ हमारी आंखों के सामने है, उससे अधिक यक़ीनी वह चीज़ है जो हमारी आंखों के सामने नहीं है।

अगर यह सवाल किया जाए कि इस जगत में वह कौन सी हक़ीक़त है जिसको प्रत्येक व्यक्ति मानता है तो उसका एक ही जवाब होगा यानी मौत, मौत एक ऐसी हक़ीक़त है जो हर बड़े-छोटे को माननी पड़ती है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि किसी भी वक़्त मौत आ सकती है, परन्तु जब मौत का ख़्याल होता है तो आमतौर पर लोग केवल इतना सोचते हैं कि, 'मेरे मरने के बाद मेरे बच्चों का क्या होगा?' मरने से पहले तो वे अपने जीवन के बारे में बहुत सोचते हैं, मगर मरने के बाद उन्हें केवल घर और बच्चों की फ़िक्र होती है। बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने के लिए तो वे पूरी उम्र खपा देते हैं, परन्तु ख़ुद अपने भविष्य के निर्माण के लिए कोई कोशिश नहीं करते, मानो उनके मरने के बाद उनके बच्चों का वजूद बाक़ी रहेगा, ख़ुद उन का कोई वजूद न होगा, जिसके लिए उन्हें तैयारी करने की ज़रूरत हो।

लोगों का इस अन्दाज़ से सोचना यह बताता है कि उन्हें शायद इसका एहसास नहीं है कि मरने के बाद भी एक जीवन है,

हालांकि असल ज़ीवन मरने के बाद ही शुरू होता है। अगर उन्हें इस बात का यक़ीन होता कि मर कर जब वे क़ब्र में दफ़न हो जाते हैं तो हक़ीक़त में वे दफ़न नहीं होते, बल्कि एक दूसरी दुनिया में दाख़िल कर दिये जाते हैं, तो वे बच्चों के भविष्य के बारे में चिन्तित होने से पहले यह सोचते कि, मरने के बाद मेरा क्या अन्जाम होगा? हक़ीक़त यह है कि मौजूदा ज़माने के ज़्यादातर लोग भले ही वे धार्मिक हों या अधार्मिक- इस यक़ीन से ख़ाली हो गए हैं कि वे मरने के बाद ख़त्म नहीं हो जाते, बल्कि एक नई ज़िन्दगी हासिल करते हैं– एक ऐसी ज़िन्दगी जो मौजूदा ज़िन्दगी से अधिक सच्ची है, जो मौजूदा ज़िन्दगी से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

यह संदेह दो कारणों से पैदा होता है। एक यह कि प्रत्येक इन्सान मर कर मिट्टी में मिल जाता है। जब हम देखते हैं कि इन्सान मर कर ख़त्म हो गया, तो हमारी समझ में नहीं आता कि वह दुबारा किस प्रकार जीवन प्राप्त कर सकेगा। और दूसरी वजह यह है कि मौत के बाद जो दुनिया है, वह हमको नज़र नहीं आती। आज की दुनिया को तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी आंखों से देख रहा है, मगर इस के बाद वाली दुनिया को अब तक किसी ने नहीं देखा इसलिए हम को यक़ीन नहीं आता कि इस जीवन के बाद भी कोई जीवन हो सकता है। आइए इन दोनों सवालों पर ग़ौर करें।

मरने के बाद का जीवन

'जब मैं मर कर मिट्टी हो जाऊंगा, तो क्या मुझे दुबारा उठाया जाएगा?' इस सवाल को इस तरह ले कर के तो बहुत कम लोग सोचते हैं, मगर हर वह व्यक्ति, जो इस बात पर गहरा यकीन नहीं रखता कि मरने के बाद उसे एक नया जीवन मिलने वाला है, उस के दिमाग़ में लाज़िमी तौर पर यह सवाल दबा हुआ रहता है। जो व्यक्ति आज के जीवन में कल के लिए चिन्तित नहीं है, वह इस बात का सुबूत पेश कर रहा है कि वह कल के जीवन के बारे में शुबह और संन्देह में हैं, चाहे वह नियमित रूप से इस मसले पर सोचता हो या न सोचता हो।

लेकिन अगर हम गंभीरता से विचार करें, तो बड़ी आसानी के साथ इसकी हकीकत समझ सकते हैं। अल्लाह ने हालंकि मौत के बाद पेश आने वाली हकीकतों को हमारी निगाहों से छिपा दिया है, क्योंकि वह हमारा इम्तिहान ले रहा है, मगर जग़त में ऐसी अनगिनत निशानियां फैला दी हैं, जिन पर ग़ौर करके हम उन तमाम हकीकतों को समझ सकते हैं जिसमें उस दूसरी दुनिया की छाया नज़र आती है।

आप जानते हैं कि हम अपनी मौजूदा शक्ल में पहले दिन से मौजूद नहीं हैं। इन्सान का आरम्भ एक निराकार तुच्छ द्रव्य-पदार्थ से होता है जो माँ के पेट में बढ़ कर इन्सानी शक्ल इख़्तियार कर

लेता है और फिर बाहर आकर अधिक उन्नति करके पूरा आदमी बन जाता है। एक अचेत तुच्छ द्रव्य जो इतना छोटा होता है कि खुली आंख से देखा नहीं जा सकता, उसका बढ़ कर छः फुट लंबा आदमी बन जाना एक ऐसी घटना है जो हर दिन इस दुनिया में पेश आती है। फिर यह समझने में आप को क्या कठिनाई होती है कि हमारे शरीर के अंग-प्रत्यंग, जो अति छोटे-छोटे कण बन कर ज़मीन में फैल जायेंगे, दुबारा पूरे आदमी की शक्ल किस तरह इख़्तियार कर सकेंगे?

हर इन्सान जिसको आज आप चलता-फिरता देख रहे हैं, वह वास्तव में उन बेशुमार अणुओं का योग है, जो पहले हमारी ज़मीन और हमारे वातावरण के भीतर असीम विस्तार में फैले हुए थे, फिर हवा, पानी और भोजन ने इन अणुओं को लाकर मानव-रूप में इकट्ठा कर दिया और अब हम इन्हीं बिखरे हुए अणुओं के योग को एक चलते-फिरते इन्सान की शक्ल में देख रहे हैं। यही अमल दुबारा होगा। हमारे मरने के बाद हमारे जीवन के हिस्से हवा और पानी और ज़मीन में मिल जायेंगे और उसके बाद ख़ुदा का हुक्म होगा तो वे इसी तरह इकट्ठा होकर एक शारीरिक रूप धारण कर लेंगे, जिस तरह पहली बार क़िया था। एक घटना जो हो चुकी है, वही अगर दुबारा हो तो इसमें हैरत की कौन सी बात है। खुद भौतिक संसार में इसकी मिसालें मौजूद हैं, जो इस हक़ीक़त की ओर इशारा करती हैं कि जिन्दगी को दूसरी बार दुहराया जा सकता है। हर साल बरसात में हम देखते हैं कि जमीन में हरी-हरी घासें उगती हैं और हर तरफ़ हरियाली फैल जाती है। फिर गर्मी का ज़माना उसके लिए मौत का संदेश बन कर आता है और सारी ज़मीन सूख जाती है। जहां घासें लहलहा रही थीं वहां चटियल मैदान दिखाई देने लगता है। इस तरह एक जीवन पैदा होकर मर जाता है। लेकिन अगली बार जब बरसात का मौसम आता है और आसमान से

बारिश होती है, तो वही मरी हुई घासें दुबारा ज़िन्दा हो उठती हैं और सूखी हुई ज़मीन फिर हरी-भरी दिखाई देने लगती है। इसी तरह इन्सान भी मरने के बाद ज़िन्दा किए जायेंगे।

इसी बात को एक और पहलू से देखिए। जीवन के बाद मौत के बरे में संदेह इसलिए पैदा होता है कि हम अपना अन्दाज़ा मौजूदा शारीरिक ढांचे को देखकर लगाते हैं। हम समझते हैं कि ज़ाहिर में जो एक चलता-फिरता शरीर मालूम पड़ता है, यही असल इंसान है और जब वह सड़-गल जाएगा और उसके कण मिट्टी में मिल चुके होंगे तो उसको दुबारा किस तरह एक शरीर के रूप में पैदा किया जा सकता है? हम अपनी आंखों से देखते हैं कि एक ज़िन्दा इंसान को मौत आती है, वह खामोश हो जाता हैं, उसकी हरकत रुक जाती है, उसकी तमाम ताक़तें ख़त्म हो जाती हैं। इसके बाद वह ज़मीन के नीचे दबा दिया जाता है या कुछ कौमों के रिवाज के मुताबिक़ जला कर नदी में बहा दिया जाता है। कुछ दिनों के बाद वह कण-कण होकर इस तरह धरती का अंश बन जाता है कि फिर उसका वजूद हमें नजर नहीं आता। एक ज़िन्दा इन्सान को इस तरह ख़त्म होते हुए हम रोज़ाना देखते हैं, फिर हमारी समझ में नहीं आता कि वह इन्सान जो ख़त्म हो चुका है, वह दुबारा कैसे मौजूद हो जाएगा?

मगर हमारा असल वजूद हमारा यह शरीर नहीं है जिसको हम ज़ाहिर में चलता-फिरता देखते हैं, बल्कि असल वजूद भीतर का 'इन्सान' है जो आंखों से नज़र नहीं आता, जो सोचता है, जो शरीर को हरकत में रखता है, जिसकी मौजूदगी शरीर को ज़िन्दा रखती है और जिसके निकल जाने के बाद शरीर तो बाकी रहता है, मगर उसमें किसी क़िस्म का जीवन नहीं पाया जाता।

हकीकत यह है कि इन्सान किसी ख़ास शरीर का नाम नहीं है बल्कि उस रूह (आत्मा) का नाम है, जो शरीर के भीतर मौजूद होती है। शरीर के बारे में हमको मालूम है कि यह बहुत से अति

छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है, जिसको जीवन-कोशा कहते हैं। हमारे शरीर में कोशाओं की वही हैसियत होती है जो किसी मकान में उसकी ईंटों की होती है। हमारे शारीरिक मकान की वे ईंटें या परिभाषा में हमारे कोशा हमारी हरकत और हमारे अमल के बीच बराबर टूटते रहते हैं, जिसकी कमी हम भोजन द्वारा पूरी करते हैं। भोजन पचने पर यही विभिन्न प्रकार के कोशा बनाता है जो शरीर की टूट-फूट को पूरा कर देते हैं। इस तरह इन्सान का शरीर बराबर घिसता और बदलता रहता है। पिछले कोशा टूटते रहते हैं और नए कोशा उनकी जगह ले लेते हैं। यह अमल प्रतिदिन होता रहता है, यहां तक कि कुछ दिनों के बाद पूरा शरीर नया हो जाता है। यह अमल लगभग दस साल में पूरा हो जाता है। दूसरे शब्दों में आपका जो शरीर दस साल पहले था, उसमें आज कुछ भी बाक़ी नहीं रहा। आज आपका शरीर एक नया शरीर है दस साल की मुद्दत में आप के शरीर के जो हिस्से टूट कर अलग हुए हैं, अगर उनको पूरी तरह इकट्ठा किया जा सके तो ठीक आपकी शक्ल का एक दूसरा आदमी खड़ा किया जा सकता है, यहां तक कि अगर आपकी उम्र सौ साल हो तो आप जैसे लगभग दस आदमी बनाए जा सकते हैं। वे आदमी ज़ाहिरी तौर पर देखने में आपकी तरह होंगे, मगर वे सब के सब मुर्दा शरीर होंगे, जिनके भीतर 'आप' मौजूद न होंगे, क्योंकि आपने पिछले शरीरों को छोड़ कर एक नए शरीर को अपना ढांचा बना लिया है।

इस तरह आपका शरीर बनता-बिगड़ता रहता है, मगर आपके भीतर कोई तब्दीली नहीं होती। जिस चीज को आप 'मैं' कहते हैं वह बदस्तूर बाक़ी है। आपने अगर दस साल पहले कोई समझौता किया था, तो आप हर वक़्त स्वीकार करते है कि यह समझौता 'मैं' ने किया था। हालांकि अब आपका पिछला शारीरिक वजूद बाक़ी नहीं है। वह हाथ अब आपके शरीर पर नहीं है जिसने

समझौते के कागज़ों पर दस्तख़त किए थे और न वह ज़ुबान मौजूद हैं जिसने समझौते के बारे में बात-चीत की थी, लेकिन आप अब भी मौजूद हैं और स्वीकार करते हैं कि दस साल पहले जो समझौता मैंने किया था, वह मेरा समझौता था और अब भी मैं उसका पाबन्द हूं। यही वह भीतर का 'इन्सान' है जो शरीर के साथ बदलता नहीं, बल्कि शरीर की कितनी ही तब्दीलियों के बाद भी अपने आपको बाक़ी रखता है।

इससे साबित हुआ कि इन्सान किसी ख़ास शरीर का नाम नहीं है, जिसके मरने से इन्सान भी मर जाए, बल्कि वह एक ऐसी रूह है जो शरीर से अलग अपना स्थायी वजूद रखती है और शरीर के अंगों के बिखर जाने के बाद भी बदस्तूर बाकी रहती है। शरीर के बदलने और रूह के न बदलने में इस हकीकत का साफ इशारा मौजूद है कि शरीर नाशवान है, परन्तु रूह नाशवान नहीं।

कुछ मूर्ख लोग यह कहते हैं कि जीवन और मौत नाम है कुछ भौतिक तत्वों के इकट्ठा होने और फिर बिखर जाने का। इन तत्वों के मिलने से जीवन बनता है और इनके अलग हो जाने से मौत हो जाती है। मगर यह एक बिल्कुल बेकार-सी बात है जिसका 'ज्ञान' से कोई संबंध नहीं। अगर जीवन केवल 'तत्वों में एक तरतीब' का नाम है तो इसको उस वक़्त तक बाकी रहना चाहिए जब तक तत्वों की यह तरतीब मौजूद है और यह भी मुम्किन होना चाहिए कि कोई चतुर वैज्ञानिक इन तत्वों को इकट्ठा करके जान पैदा कर सके। मगर हम जानते हैं कि ये बातें नामुम्नि हैं।

हम देखते हैं कि मरने वालों में सिर्फ वही नहीं हैं, जिनके साथ कोई ऐसी घटना हो जाए, जो उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दे, बल्कि हर हालत में हर उम्र के लोग मरते हैं। कभी-कभी तो अच्छे-भले तन्दुरूस्त आदमी के दिल की हरकत यकायकी इस तरह बन्द हो जाती है कि कोई डाक्टर कारण नहीं बता सकता कि ऐसा

क्यों हुआ। हम देखते हैं कि मरने वाले का शरीर अपनी पिछली हालत में लेटा हुआ है, तत्वों की 'तरतीब' मुकम्मल तौर पर मौजूद है, मगर उसके भीतर जो रूह थी, वह निकल चुकी है। तमाम तत्व उसी ख़ास तरतीब के साथ अब भी मौज़ूद होते हैं, जो अब से कुछ मिनट पहले थे, मगर उसके भीतर जान नहीं होती। यह घटना ज़ाहिर करती है कि भौतिक तत्वों की तरतीब जान नहीं पैदा करती, बल्कि जीवन उससे अलग एक चीज़ है जो अपना स्थायी वजूद रखता है।

किसी लेबारेट्री में ज़िंदा इंसान नहीं बनाया जा सकता, हालांकि शरीर का ढांचा हर वक़्त बनाया जा सकता है। यह मालूम हो चूका है कि ज़िंदा जिस्म का हर अंग बिल्कुल मामूली केमिकल एटम होते हैं। इसमें कार्बन वही है जो हम कालिक में देखते हैं, हाइड्रोजन और आक्सीजन वही है जो पानी की असल है, नाइट्रोजन वही है जिससे वायुमंडल का अधिक भाग बना हुआ है, और इसी तरह दूसरी चीज़ें मगर क्या एक ज़िन्दा इन्सान सिर्फ मामूली एटमों का एक मुख्य योग है जो किसी असाधारण तरीके से बना दिया गया है, या वह इसके अलावा कुछ और है। वैज्ञानिक कहते हैं कि यद्यपि हम यह जानते हैं कि मानव-शरीर अमुक-अमुक भौतिक पदार्थों से मिल कर बना है, मगर इन्हीं पदार्थे को इकट्ठा करके हम ज़ान पैदा नही कर सकते। दूसरे शब्दों में एक ज़िन्दा इन्सान का शरीर केवल बेजान एटमों का योग नहीं है, बल्कि वह एटम और जीवन दोनों है। मरने के बाद एटमों का योग तो हमारे सामने मौजूद रहता है, मगर जीवन उससे विदा होकर दूसरी दुनिया में चला जाता है।

इस तफ़्सील से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीवन मिटने वाली वीज़ नहीं है, बल्कि बाकी रहने वाली चीज़ है। अब हम समझ सकते हैं कि जीवन मौत के बाद का सिद्धांत कितना अक्ल में आने वाला और प्राकृतिक सिद्धांत है। यह हकीकत पुकार रही है कि